12 जन्म-बाधा

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

लेकिन गलत हुआ तो बात बिगड़ सकती है। जिस लड़की को सही लिखना तक नहीं आता, उसकी बात कौन सुनेगा? लेकिन... लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात? हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है! जो हो, लिख देती हूँ सीधे-सीधी।

जय माता रानी! जय गणेश जी! और पड़ोस वाली दिना बात-बात पर किन्हें याद करती है?... हाँ... या रब्बा!... मुझे आज यह चिट्ठी लिखना दो, लिखना हो जे, भगवान! मेरी कोई मदद करने वाला नहीं है। कोई नहीं।

उसकी आँखें भर आयीं, लेकिन वह रोकर समय बरबाद नहीं करना चाहती थी। इसलिए जैसे-तैसे लिखने ही लगी।

प्रधानमंत्री जी,

प्रणाम!

मैंने सुना है, बंधुआ मजदूरों को उनके मालिक से छुड़ाया जा रहा है। मुझे भी छुड़ा दीजिए न! मेरी पढ़ाई नहीं हो सकी है। पप्पा कहते हैं, बाद में देखा जाएगा, बाद में, यानी कभी नहीं। बारह की तो हो गई। मेरे तीनों भाई स्कूल जाते हैं। सब मुझ से छोटे हैं। बबलू जो मुझ से साल भर ही छोटा है, अपने जूठे बर्तन तक नहीं धोता। गुड्डू नौ साल का है। वह तो बबलू से भी ज्यादा कामचोर है। मुन्नू सात साल का है; वह बेचारा अक्सर बीमार ही रहा करता है। रीता पाँच साल की है, मीता तीन की और छोटकी साल भर की; वह भी भात खाने लगी है।

मैं दिन भर घर के कामों में लगी रहती हूँ। पप्पा कहते हैं, मैं माँ से भी अच्छी रोटियाँ बनाने लगी हूँ। लेकिन माँ की तरह सब्ज़ी नहीं बना पाती सो रोज़ डाँट सुनती हूँ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

माँ कहती है, मैं बनाना नहीं चाहती सो बिगाड़ देती हूँ। लेकिन क्या करूँ, मुझसे हो ही नहीं पाता। सारे बर्तन मुझे ही माँजने पड़ते हैं। मुन्नू, रीता, मीता और अब छोटकी सब को मैं ही टाँगती रही हूँ। सबके कपड़े भी मुझे ही धोने पड़ते हैं। एक काम से दूसरे काम के बीच मुझे सुस्ताने का भी समय नहीं मिलता, फिर भी सब कहते हैं- गुड्डी धीमर है।

परसाल के पहले वाले साल, मामा जी की जिद पर मेरा नाम स्कूल में लिखवाया गया था, एक महीने ही तो जा पायी। उसी समय छोटकी हो गई सो माँ अकेले घर नहीं चला पायी, मुझे स्कूल छोड़ देना पड़ा। मैंने माँ से कहा था, मुझे भी पढ़ने दो, पप्पा ने सुना तो बोले कि जैसे घर ही में ककहरा सीखा है, वैसे ही आगे भी कुछ पढ़ ले। लेकिन घर में मुझे कौन पढ़ायेगा। और कब? मैं अपनी मर्जी से स्कूल जा नहीं सकती, किसी से कुछ कह नहीं सकती। क्या यह सच है कि बंधुआ मजदूरों को छुड़ा दिया गया है? तो मुझे भी छुड़वा दीजिए न!

आपकी बेटी (गीता) गुड्डी

हाय! पप्पा तो आ गए।

गुड्डी ने झट से चिट्ठी मोड़ कर छिपा ली। लीडु को फिर खाट के नीचे ही फेंक दिया और दौड़ पड़ी। जल्दी दरवाजा नहीं खुला तो पप्पा बिगड़ने लगते हैं।

"माँ कहाँ है?"

"सोयी है, बरामदे में।" वह हकलाकर बोली, जैसे चोरी करते पकड़ी गई हो।

"जा, चाय बना ला।"

बनवा लो चाय, बनवा लो! जितने दिन प्रधानमंत्री जी मुझे नहीं छुड़वा देते, उतने दिन खटवा लो। बस, अब सबकी आँख बचाकर पता लिख लेना है। और टिकट? टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे। मेरे लिफाफे को खोलने के पहले ही मेरी हालत भाँप जाएँगे।

माँ-बाप के लिए चाय बनाकर ले जाते हुए उसके पैरों में फुर्ती-सी आ गयी और मन आनन्द से भर गया। उसे लगने लगा जैसे उसकी मुक्ति की घोषणा में अधिक दिन बाकी नहीं है।

-सुधा

शब्दार्थ

बिगाड़- ख़राब **धीमर**-सुस्त **गोपनीय**-छिपाने योग्य **मुक्ति**-छुटकारा

प्रश्न-अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से

1. गुड्डी अपनी तुलना बंधुआ मजदूर से क्यों करती है?
2. माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती आ गयी- क्यों?
3. **पढ़िए एवं सोचकर उत्तर दीजिए-**
   (i) "लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात। हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है।"
   (क) ऐसा गुड्डी ने क्यों सोचा?
   (ख) यह वाक्य गुड्डी के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को दर्शाता है?
   (ii) "टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे।"
   (क) गुड्डी ने ऐसा क्यों सोचा?
   (ख) यह वाक्य गुड्डी के किस पक्ष को दर्शाता है?
4. पठित पाठ के आधार पर आपके मस्तिष्क में जो दृश्य उत्पन्न होता है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

1. इस कहानी का शीर्षक 'जन्म-बाधा' है। आपकी दृष्टि में ऐसा शीर्षक क्यों दिया गया है?
2. किन-किन बातों से पता चलता है कि गुड्डी अपनी मुक्ति के लिए दृढ़संकल्प थी?
3. अपनी मुक्ति के लिए गुड्डी प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखती है। इससे इसके माता-पिता परेशानी में पड़ सकते हैं। गुड्डी के इस व्यवहार पर तर्क सहित विचार कीजिए।

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. उन कारणों का पता लगाइए जो छोटी-छोटी लड़कियों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ लादने के लिए जिम्मेदार हैं।
2. **निम्नलिखित कार्य कौन करता है**
   (क) गुड़ियों से खेलना।
   (ख) सिलाई-बुनाई का कार्य करना।
   (ग) झाड़ू-बर्तन, चूल्हा-चौका का काम घर में करना।
   (घ) घर में अपने छोटे भाई-बहनों को संभालना।

   सोचिए क्या यह सही है?
3. प्रतिदिन किए गए कार्यों की सूची बनाइए, फिर अगले दिन उस सूची में कुछ नया जोड़िए।